

पाठ-बारह लुशेन की माँ



गुणवती, बाग, बैंगन, काँटा, गर्भवती, दुस्साहसी, नाहक,
अजगर, भयंकर, आफत, कैद, अपमान, देवलोक, धागा,
अनसुना, तड़ित्, चुभना, निगलना, लटकना, चीरना।

प्राचीन काल में मिजोराम में एक स्त्री रहती थी। वह बहुत गुणवती और सुन्दर थी। एक दिन वह अपने बाग में बैंगन तोड़ रही थी। उसके हाथ में बैंगन का काँटा चुभ गया। काँटा चुभने से वह गर्भवती हो गई।

समय आने पर उसने पुत्र को जन्म दिया। उसने अपने पुत्र का नाम रखा-लुशेन राजकुमार। वह बड़ा होने पर बहुत वीर बलिष्ठ हो गया। एक दिन लुशेन की माँ ने कहा “बेटा! तुम्हारे छह भाई और थे। वे बड़े दुस्साहसी थे। एक दिन वे काले अजगर का शिकार करने गए। तब से नहीं लौटे। अजगर ने उन्हें जिन्दा निगल लिया है। मुझे तुम्हारे भाइयों की बहुत याद आती हैं”।

अपने भाइयों की बात सुनकर लुशेन का दिल भी भर आया। उसने प्रतिज्ञा की कि वह अजगर को मारकर अपने भाइयों को वापस लाएगा। वह काले अजगर की खोज में चल दिया। चलते-चलते शाम हो गई। लुशेन को एक झोपड़ी दिखाई दी। वह उसमें चला गया। वहाँ एक बूढ़ी बैठी थी। उसने बूढ़ी से कहा —

“दादी, क्या मैं आज रात आपकी झोपड़ी में रह सकता हूँ?” “जरूर रह सकते हो। किन्तु तुम्हें जाना कहाँ है?” बूढ़ी ने पूछा। लुशेन ने कहा, “मेरे छह भाइयों को एक काले अजगर ने निगल लिया है। मैं उसी की खोज में निकला हूँ।”

“बेटा, तुम्हारे भाई भी मेरे पास ही ठहरे थे। मैंने ही उन्हें काले अजगर का पता बताया था। वह अजगर बहुत भयंकर है। उसके पास से कोई लौटकर नहीं आता। तुम क्यों नाहक अपनी जान आफत में डाल रहे हो। रात को मेरे पास रहकर, सुबह अपनी माँ के पास लौट जाओ” बूढ़ी बोली।

लुशेन ने उत्तर दिया, “दादी, मैं उस अजगर के पास अवश्य जाऊँगा। तुम मुझे उसका पता बताओ। मैंने अपने भाइयों को छुड़ाने की प्रतिज्ञा की है।”

बूढ़ी ने, “जैसी तुम्हारी इच्छा” कहकर लुशेन को काले अजगर का पता बता दिया। सुबह होते ही वह अजगर के निवास स्थान की ओर चल पड़ा। दोपहर होते-होते वह काले अजगर के पास पहुँच गया। अजगर ने उसे देखते ही कहा—

“तुम कौन हो ? यहाँ से चले जाओ, वरना मैं तुम्हें निगल जाऊँगा।”

“मैं तुम्हारा काल हूँ— लुशेन राजकुमार। तुम्हारे पेट की कैद से अपने भाइयों को छुड़ाने आया हूँ।” कहकर लुशेन ने अजगर को मार डाला। उसने अजगर का पेट चीर दिया। उसके छह भाई बाहर निकल आए। लुशेन ने उन्हें अपना परिचय दिया, “मैं आप लोगों का भाई हूँ— लुशेन राजकुमार। मैंने ही इस अजगर को मार कर आप सब को मुक्त किया है।”



किन्तु छह भाइयों ने लुशेन पर विश्वास नहीं किया। उन्होंने उसे वहीं छोड़ दिया। खुद अजगर के टुकड़े लेकर घर आ गए। लुशेन बहुत दुखी हुआ। वह रोता हुआ भाइयों के पीछे-पीछे आया। उसने माँ से कहा—

“माँ! भाइयों ने मेरा अपमान किया है। मैं इनके साथ नहीं रह सकता। तुम मुझे कच्चे धागे का गोला दे दो। मैं उसके सहारे देवलोक जाऊँगा।”

माँ भी लुशेन के अपमान से दुखी हुई। उसने कहा, “बेटा! तुम मुझे भी अपने साथ ले चलो।”

लुशेन बोला, “ठीक है। तुम मेरे पीछे धागा पकड़ कर आ जाना। ध्यान रखना कि धरती की ओर नहीं देखना। ऐसा करने से बीच में ही लटक जाओगी।”

“ऐसा ही करूँगी” कहकर लुशेन की माँ ने उसे कच्चे धागे का गोला दे दिया। वह धागे के सहारे देवलोक की ओर जाने लगा। माँ भी पीछे-पीछे धागे पर चढ़ने लगी। धीरे-धीरे दोनों आकाश में

पहुँच गए। जब छह भाइयों ने यह दृश्य देखा तो वे चिल्लाने लगे। वे चिल्ला-चिल्ला कर लुशेन और माँ को वापिस बुला रहे थे।

लुशेन ने भाइयों की बात नहीं सुनी। वह चुपचाप ऊपर चढ़ता गया। माँ, अपने पुत्रों की आवाज को अनसुना नहीं कर सकी। उसने धरती की ओर देख लिया। नीचे की ओर देखते ही धागा टूट गया। लुशेन की माँ बीच आकाश में लटकी रह गई। लुशेन देवलोक चला गया।

लुशेन की माँ आज तक वहीं लटकी हुई है। वह जब रोती है, तभी बादल उमड़ते और बरसते हैं। वह जिस धागे पर लटकी हुई है, उसका ऊपरी सिरा तड़ित् है और नीचे का सिरा पवन।

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

गुणवती	=	गुणी, गुणशाली।
बाग	=	वाटिका, उपवन।
बलिष्ठ	=	बली, बलवान।
दुस्साहसी	=	हानिकर साहस करने वाला, अनुचित साहस करने वाला।
अजगर	=	एक बड़ा सर्प जो बकरी, हिरन आदि को निगल जाता है।
नाहक	=	व्यर्थ, बेमतलब।
आफ़त	=	मुसीबत, संकट।
निगलना	=	गले से नीचे उतार देना।
चीरना	=	टुकड़े करना।
अपमान	=	अनादर, बेइज्जती।
धागा	=	तागा, डोरा।
लटकना	=	टँगना।
तड़ित्	=	बिजली।
चुभना	=	धँसना, नुकीली चीज का भीतर घुसना।

2. उत्तर दीजिए :

- (क) स्त्री कैसे गर्भवती हो गई ?
- (ख) स्त्री के पुत्र का क्या नाम था ?
- (ग) एक दिन माँ ने लुशेन से क्या कहा ?
- (घ) लुशेन ने कैसी प्रतिज्ञा की ?
- (ङ) बुढ़िया ने लुशेन को अजगर के बारे में क्या बताया ?
- (च) लुशेन ने अजगर से क्या कहा ?
- (छ) लुशेन ने अपने भाइयों को कैसे बचाया ?
- (ज) लुशेन के दुखी होने का क्या कारण था ?
- (झ) लुशेन ने देवलोक जाने का निर्णय क्यों लिया ?
- (ञ) लुशेन की माँ ने लुशेन से अपने को भी देवलोक चलने को क्यों कहा ?
- (ट) लुशेन की माँ बीच आकाश में क्यों लटकी रह गई ?
- (ठ) प्रस्तुत कथा से आपको कौन-सा उपदेश मिलता है ?
- (ड) एक मणिपुरी लोककथा अपने शब्दों में लिखने का प्रयास कीजिए।

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

गुणवती	-----
बलिष्ठ	-----
दुस्साहसी	-----
नाहक	-----
आफत	-----
अपमान	-----
अनसुना	-----
तड़ित्	-----
भयंकर	-----
गोला	-----

4. वाक्य पूरा कीजिए :

- (क) अपने भाइयों की बात सुनकर ----- |
(ख) दोपहर होते-होते वह ----- |
(ग) छह भाइयों ने लुशेन पर ----- |
(घ) वह रोता हुआ भाइयों के ----- |
(ङ) वह धागे के सहारे ----- |

5. सही कथन के आगे (✓) का निशान और गलत कथन के आगे (X) का निशान लगाइए :

- (क) लुशेन के छह भाई और थे। ☐
(ख) अजगर की खोज करते समय लुशेन को एक महल दिखाई दिया। ☐
(ग) सुबह होते ही लुशेन अजगर के निवास-स्थान की ओर चल पड़ा। ☐
(घ) लुशेन ने अजगर का सिर काट डाला। ☐
(ङ) माँ भी पीछे-पीछे धागे पर चढ़ने लगी। ☐

6. ध्यान से पढ़िए और समझिए :

धातु+ना के निर्देशात्मक रूप से क्रिया के कार्य पर सामान्य जोर देने का अर्थ प्रकट होता है।
जैसे –

तुम धागा पकड़कर आ जाना।
तुम अपने बड़े भाई की बात मानना।
तुम जल्दी वापस आना।
तुम यह पुस्तक जरूर पढ़ना।
तुम अकेले मत जाना।
यह दवा रोज तीन बार पीना।
ध्यान रखना कि धरती की ओर नहीं देखना।

7. नीचे लिखे दो उदाहरणों को भी देखिए :

तुम मेरे साथ बाजार चलो ।

तुम मेरे साथ बाजार चलना ।

दोनों वाक्य निर्देशात्मक हैं । पहले वाक्य से बाजार चलने का आदेश प्रकट होता है । किन्तु दूसरे वाक्य से बाजार चलने के आदेश पर केवल सामान्य जोर देने का अर्थ प्रकट होता है ।